प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
सत्र 8: आज्ञाकारिता (4ब)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **यिर्मयाह 15:16**
"तेरे वचन मिल गए, और मैंने उन्हें खा लिया, और तेरे वचन मेरे लिये आनन्द के पात्र बन गए
और मेरे मन की प्रसन्नता, क्योंकि हे यहोवा, सेनाओं के परमेश्वर, मैं तेरे नाम से पुकारा जाता हूं।

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* ***- यिर्मयाह 15***

चरण 4*:* व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

*एक.*पवित्रशास्त्र की प्रमुख आयतों को याद करना क्यों महत्वपूर्ण है?

दो. परमेश्वर की इच्छा को खोजने या उसका पालन करने के लिए "शांति की भावना" की तलाश करना या उस पर निर्भर रहना खतरनाक क्यों है? योना को याद करें जिसे नीनवे जाने के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में शांति नहीं थी।

*तीन.*भावनाओं का पालन करने बनाम परमेश्वर के वचन का पालन करने के मूल्य और खतरों पर विचार करें।

*चार.*चेले "परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानने" की इच्छा कैसे करते हैं? याद रखिए कि काम शब्दों से ज़्यादा बोलते हैं।

पाँच. बताएं कि कैसे हम आत्मा द्वारा सशक्त हैं और मसीह का अनुसरण करने की अपनी प्रतिबद्धता पर कार्य करने के लिए अकेले नहीं छोड़े गए हैं।

चरण 5*: पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 4 बी लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

जब एक गंभीर दुविधा, एक गंभीर प्रलोभन या एक महत्वपूर्ण निर्णय का सामना करना पड़ता है, तो केवल भोले-भाले ही विश्वास करते हैं कि वे जल्दी से परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं, बाइबल खोल सकते हैं और जादुई रूप से उत्तर खोज सकते हैं। जबकि परमेश्वर सीमित नहीं है, पवित्र आत्मा आमतौर पर उन चीजों को हमारी स्मृति में लाने का विकल्प चुनता है जो पहले से ही मौजूद हैं। यीशु ने चेतावनी दी,"... तुम धर्मग्रंथों को नहीं जानते, और न परमेश्वर की शक्ति को जानते हो" (मत्ती 22:29 केजेवी)। शिष्य को परमेश्वर के वचन का कार्यसाधक ज्ञान होना चाहिए।

एक स्कूल टीचर का मानना था कि परमेश्वर उसे हमारे साथ सेवा करने के लिए अपने शिक्षण अनुबंध को तोड़ने का निर्देश दे रहा था। उसे विश्वास था कि यह परमेश्वर की इच्छा थी क्योंकि उसके पास इसके बारे में "शांति" थी।

मैं हमेशा यहूदी बस्ती में हमारे साथ शामिल होने वाले नए मिशनरियों के बारे में उत्साहित रहता हूं। हमारा वर्तमान स्टाफ संभवतः उन सभी लोगों को जवाब नहीं दे सकता है जो हमारी सेवकाई के माध्यम से परमेश्वर को जानना चाहते हैं। लेकिन मुझे पता था कि इस शिक्षक के लिए यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि वह अपना अनुबंध तोड़े। परमेश्वर कहता है, "यदि कोई मनुष्य यहोवा से मन्नत खाता है, या अपने आप को बाध्यकारी दायित्व से बाँधने की शपथ लेता है, तो वह अपने वचन का उल्लंघन न करेगा; वह अपने मुंह से निकलने वाले सब कुछ के अनुसार करेगा" (गिनती 30:2)। परमेश्वर का वचन, "शांति की भावना" नहीं, उसकी इच्छा को प्रकट करता है। योना को याद है? नीनवे जाने के बारे में उसके पास कोई "शांति" नहीं थी, लेकिन यह निश्चित रूप से परमेश्वर की इच्छा थी, जैसा कि "प्रभु के वचन" (योना 1:1) द्वारा प्रकट किया गया है।

मेरा मानना है कि यह शिक्षक ईमानदारी से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहता था और उसकी भावनाओं ने उसे विश्वास दिलाया कि वह सही थी। लेकिन ईसाई जीवन परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता पर आधारित है, न कि आपकी भावनाओं का

पालन करने पर। पौलुस ने कहा, "... बुराई में बच्चे बनो, परन्तु अपनी सोच में परिपक्व हो" (1 कुरिन्थियों 14:20)। "बच्चों जैसा विश्वास" अज्ञानता के लिए लाइसेंस नहीं है। पौलुस ने बार-बार कहा, "मैं नहीं चाहता कि तुम अज्ञानी हो ...।

परमेश्वर के वचन के पर्याप्त ज्ञान के बिना, एक शिष्य अपने भविष्य को परमेश्वर की इच्छा और अपने विश्वास के तथ्यों में सुरक्षित करने के बजाय, भावनाओं, आशाओं और विचारों पर जुआ खेल रहा है। एक शिष्य यिर्मयाह की खोज का अनुभव करता है: "तेरे वचन मिल गए और मैं ने उन्हें खा लिया, और तेरे वचन मेरे लिए आनन्द और मेरे हृदय की प्रसन्नता बन गए..." (यिर्मयाह 15:16)।

आपको आज्ञा मानने की इच्छा रखनी चाहिए

इससे पहले कि आप यह जानते हों कि परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए आपको प्रतिबद्ध होना चाहिए। वर्षों पहले, एक प्रसिद्ध तंग-रस्सी-वॉकर एक तार पर नियाग्रा फॉल्स को पार करने वाला था। उसने भीड़ से पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि वह ऐसा कर सकता है। जब उन्होंने अपने विश्वास की पुष्टि की, तो उसने उनसे फिर पूछा, "क्या आप वास्तव में विश्वास करते हैं कि मैं यह कर सकता हूं?" जब उनके चिल्लाने ने पूर्ण विश्वास का संकेत दिया, तो उन्होंने एक स्वयंसेवक को अपनी पीठ पर सवारी करने के लिए कहा।

प्रतिबद्धता अपने आप को एक व्यक्ति, एक आदर्श या एक लक्ष्य के लिए बांधना है, चाहे परिणाम कुछ भी हो। आपकी प्रतिबद्धता मसीह से बंधे रहने, उसके साथ एक होने की प्रतिज्ञा है; अपने भविष्य, अपने जीवन को उसके हाथों में रखने के लिए। पॉल विश्वासियों से आग्रह करता है "अपने शरीर को एक जीवित और पवित्र बलिदान प्रस्तुत करें, जो परमेश्वर को स्वीकार्य हो..." (रोमियों 12:1)।

अधिकांश ईसाई परमेश्वर के वचन का पालन करना चाहते हैं, लेकिन इच्छा करना पर्याप्त नहीं है। चाहना अक्सर आपकी भावनाओं का एक कार्य होता है। यह आपकी भावनाओं के साथ उतार-चढ़ाव करता है। शिष्य परमेश्वर के वचन का पालन करने की इच्छा रखता है।

परमेश्वर आपसे यह अपेक्षा नहीं करता है कि आप अपने आप में मसीह जैसी इच्छा का प्रयोग करें। पौलुस सिखाता है कि "... यह परमेश्वर है जो आप में काम करता है, इच्छा और उसकी अच्छी इच्छा के लिए कार्य करने के लिए" (फिलिप्पियों 2:13)। आपकी आत्मा-सशक्त इच्छा आपकी भावनाओं पर हावी हो सकती है और आपको मसीह के प्रति अपनी पूर्व प्रतिबद्धता पर कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकती है (रोमियों 8)।

मुझे याद है कि मैं एक ऐसे होटल में रह रहा था जिसमें एक उच्च डाइविंग बोर्ड के साथ एक स्विमिंग पूल था। काफी घबराहट के साथ मैंने उस उच्च बोर्ड से एक गोता लगाने का फैसला किया। सावधानी से मैंने सीढ़ी के शीर्ष पर धातु की सीढ़ियों पर अपना रास्ता बनाया और फाइबर ग्लास के उस स्लैब पर कांपते हुए खड़ा हो गया। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि गुरुत्वाकर्षण मुझे पूल में खींच सकता है। लेकिन मुझे यह भी पता था कि जब तक मैं कूदता नहीं तब तक ऐसा करने की संभावना नहीं थी। कोई गुरुत्वाकर्षण की तुलना हमें सशक्त बनाने के भगवान के काम से कर सकता है; यह हमेशा उपलब्ध होता है जब हम आज्ञा का पालन करना चुनते हैं।

आज एक प्रमुख दर्शन है, "अगर यह अच्छा लगता है, तो इसे करें।" नकारात्मक भावनाओं या अनुभवों से बचना कई लोगों के लिए सर्वोच्च नियम बन गया है। वे गलती से मान लेते हैं कि आनंद और खुशी पर्यायवाची हैं। शैतान बुराई को अच्छा दिखाने में माहिर है। वह दुष्टता को मोहक सुंदरता के साथ चित्रित करता है और रमणीय संतुष्टि का वादा करता है। यदि पाप आनंददायक नहीं होते, तो वे कोई प्रलोभन नहीं होते।

एक आदमी जिसने खुशी पाने के लिए अभी-अभी अपनी पत्नी को छोड़ा था, उसने मुझे आश्वासन दिया कि भगवान इसे स्वीकार करेंगे। परमेश्वर चाहता था कि वह खुश रहे और यह उसकी वर्तमान स्थिति में असंभव था - उस प्रतिज्ञा के बावजूद "बेहतर या बदतर के लिए ... जब तक मृत्यु हमें अलग नहीं कर देती।" उसे अस्थायी सुख मिल सकता है, लेकिन उसे खुशी नहीं मिलेगी। सच्ची खुशी केवल परमेश्वर की आज्ञा मानने से ही पाई जा सकती है।

जब परमेश्वर के वचन और किसी की भावनाओं के बीच संघर्ष होता है, तो एक शिष्य वही करने की इच्छा करता है जो परमेश्वर कहता है। यही ईसाई धर्म है।

बीसवीं सदी के ईसाई धर्म की महान त्रासदियों में से एक यह है कि कई बाइबिल के जानकार विश्वासी अपनी आज्ञाकारिता से परे शिक्षित हैं। कुछ ईसाई पवित्रशास्त्र का पालन करने की "डुबकी और छोड़ने" विधि का प्रयोग करते हैं। वे वादों में डुबकी लगाते हैं और आज्ञाओं को छोड़ देते हैं! या वे कुछ "महत्वपूर्ण" छंदों पर जोर देते हैं और दूसरों को अनदेखा करते हैं, 2 तीमुथियुस 3:16 को बदनाम करते हैं, जो घोषणा करता है कि "सभी पवित्रशास्त्र परमेश्वर से प्रेरित हैं..." (इटैलिक जोड़ा गया)।

वाट्स में युवा पुरुषों के साथ मेरे शुरुआती संबंधों को तर्कों और सवालों के बारे में लंबी चर्चा की विशेषता थी: "क्या आप साबित कर सकते हैं कि एक भगवान है?", "एक कुंवारी कैसे एक बच्चे को जन्म दे सकती है?", या "प्यार का भगवान गरीबी या बाल शोषण की अनुमति क्यों देगा?"

मुझे पता था कि परमेश्वर के वचन में कहा गया है, "अनुत्तरित प्रश्नों और विवादास्पद धार्मिक विचारों पर बहस करने में शामिल न हों ... क्योंकि इस तरह की बात सार्थक नहीं है; यह केवल नुकसान पहुंचाती है" (तीतुस 3:9 पौंड)। लेकिन मुझे लगा कि उन

सड़क के लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए मनाने का यही एकमात्र तरीका था। इसलिए, मैंने इस सिद्धांत को छोड़ दिया। मैं उन्हें परिवर्तित करने की कोशिश में ईमानदार था, लेकिन मैं परमेश्वर के वचन का पालन नहीं कर रहा था। और मैं कभी कोई बहस नहीं जीती।

अंत में, मैंने परमेश्वर के मार्ग को आजमाने का फैसला किया। मैं बाइबल पर बहस या बचाव नहीं करूंगा, बस इसकी घोषणा करूंगा (2 तीमुथियुस 4:2)। मैंने उन जवानों के लिए प्रार्थना करना शुरू कर दिया। जब अवसर मिला, तो मैंने उनके साथ परमेश्वर के प्रेम को साझा किया। बहुत पहले ही परमेश्वर की आत्मा ने उनमें से चार को मसीह का अनुसरण करने के लिए दोषी ठहराया। लेकिन दूसरों ने कभी नहीं किया। हमारे वाद-विवाद से उनके दिल कठोर हो गए थे। मसीह एक मजाक बन गया था; ईसाई धर्म, एक खेल।

मैं पवित्र आत्मा के कार्य में बाधा डालने से बच सकता था, अगर मैं पूरी तरह से और बिना किसी प्रश्न के परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता। मुझे यह चुनने का कोई अधिकार नहीं था कि मैं क्या मानूँगा। बाइबल का पालन किए बिना उसे जानना परमेश्वर का घृणित अपमान है।

रोमियों 6:16 पूछता है, "क्या तुम नहीं जानते, कि जब तुम आज्ञाकारिता के लिए अपने आप को किसी के दास के रूप में प्रस्तुत करते हो, तो तुम उसकी आज्ञा का पालन करते हो...?" चूंकि विश्वासी परमेश्वर की इच्छा का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है जैसा कि पवित्र आत्मा इसे प्रकट करता है, वह जो कुछ भी सीखता है उसे जीने के लिए एक पूर्व प्रतिबद्धता के साथ परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता है। यह दृढ़ संकल्प निर्विवाद प्रमाण है कि वह मसीह का शिष्य है।

पेज 42-45

शिष्य की चेकलिस्ट – 0bedience?
___ मैं ईमानदारी से परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता हूँ।
___ मैं परमेश्वर के वचन का पालन करूँगा।

***चरण 6**: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

मूल: एक शिष्य का निर्माण डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981 पब। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011